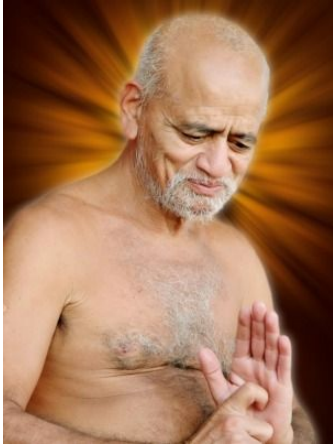




जैन ज्ञान दर्शनग्रुप

WhatsApp no 8983420775

नंदीश्वर द्वीप पूजा

सरब परव में बड़ो अढाई परव हैं ।
नन्दीश्वर सुर जाहिं लेय वासु दरब हैं ॥
हमें शक्ति सो नाहिं इहाँ करी थापना ।
पूजे जिनग्रह-प्रतिमा हैं हित आपना ॥
ॐ ह्रीं श्री-नन्दीश्वर-द्वीपे द्वी-पंचाश-ज्जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमा-समूह !
अत्र अवतर अवतर संवौषट । अत्र तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट ।
कंचन मणि मय श्रृंगार, तीरथ-नीर भरा ।
तिहूँ धार दई निरवार, जामन मरण जरा ॥
नन्दीश्वर-श्रीजिन-धाम, बावन पुंज करों ।
वसु दिन प्रतिमा अभिराम, आनंद-भाव धरों ॥
नन्दीश्वर द्वीप महान, चारो दिशि सोहे ।
बावन जिन मन्दिर जान, सुरनर मन मोहें ॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण-दिश
द्वी-पंचाश-ज्जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाये जलं
निर्वपामीति स्वाहा ।
भव-तप-हर शीतल वास,सो चन्दन नाही ।
प्रभु यह गुण कीजै साँच, आयो तुम ठाहीं ॥ नंदी. ॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण-दिश
द्वी-पंचाश-ज्जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यो संसार-ताप-विनाशनाये चन्दनं
निर्वपामीति स्वाहा ।
उत्तम अक्षत जिनराज, पुंज धरे सोहे ।
सब जीते अक्ष समाज तुम सम अरु को हैं ॥ नंदी. ॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण-दिश
द्वी-पंचाश-ज्जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यो अक्षय-पद-प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति
स्वाहा ।
तुम काम विनाशक देव, ध्याऊं फुलनसौं ।
लहूँ शील लच्छमी एव, छुटू सुलनससौ ॥ नंदी. ॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण-दिश
द्वी-पंचाश-ज्जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यो काम-बाण विध्वंसनाये पुष्पं
निर्वपामीति स्वाहा ।

नेवज इन्द्रिय बलकार, सो तुमने चुरा ।

चरू तुम ढिग सोहे सार, अचरज हैं पूरा ॥ नंदी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण-दिश
द्वी-पंचाश-ज्जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यो क्षुधा-रोग विनाशनाये नैवेद्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपक की ज्योति-प्रकाश, तुम तन मांहि लसै ।

टूटे करमन की राश, ज्ञान-कणी दरशै ॥ नंदी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण-दिश
द्वी-पंचाश-ज्जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यो मोहान्धकार विनाशनाये दीपं
निर्वपामीति स्वाहा ।

कृष्णागरु-धुप-सुवास, दश-दिशि नारि वरे ।

अति हर्ष भाव परकाश, मानो नृत्य करें ॥ नंदी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण-दिश
द्वी-पंचाश-ज्जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यो अष्टकर्म दहनाये धूपं निर्वपामीति
स्वाहा ।

बहु विधि फल ले तिहूँ काल, आनन्द नाचत हैं ।

तुम शिव फल देहु दयाल, तुहि हम जाचत हैं ॥ नंदी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण-दिश
द्वी-पंचाश-ज्जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यो महा-मोक्ष-फल प्राप्ताये फलं
निर्वपामीति स्वाहा ।

यह अरघ कियो निज-हेत, तुमको अरपतु हों ।

‘धानत’ किज्यो शिव खेत, भूमि समर्पत हो ॥ नंदी. ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण-दिश
द्वी-पंचाश-ज्जिनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताये अर्घं निर्वपामीति
स्वाहा ।

जयमाला

कार्तिक फाल्गुन साढ़के अन्त आठ दिन माहि ।

नन्दीश्वर सुर जात हैं, हम पूजे इह ठाहीं ॥

एक सौ त्रेसठ कोडी जोजन महा ।

लाख चौरसिया एक दिश में लहा ॥

आठमो द्वीप नन्दीश्वर भास्वरं ।
भौन बावन प्रतिमा नमो सुखकरं ॥
चार दिशि चार अन्जनगिरी राजही ।
सहस चौरसिया एक दिश छाजाहि ॥
ढोल सम गोल ऊपर तले सुन्दर ॥ भौन ॥
इक इक चार दिशि चार शुभ बावरी ।
एक इक लाख जोजन अमल-जल भरी ॥
चहुँ दिशा चार वन लाख जोजन वरं ॥ भौन ॥
सोल वापीन मधि सोल गिरी दधिमुख ।
सहस दश महा जोजन लखत ही सुखं ॥
बावरी कौन दो माहि दो रतिकर ॥ भौन ॥
शैल बत्तीस एक सहस जोजन कहे ।
चार सोले मिले सर्व बावन लहे ॥
एक इक सीस पर एक जिनमन्दिर ॥ भौन ॥
बिम्ब अठ एक सौ रत्नमयी सोहही ।
देव देवी सरव नयन मन मोहही ॥
पांच से धनुष ताम पद्म-आसन परं ॥ भौन ॥
लाल-नख-मुख नयन श्याम अरु श्वेत हैं ।
श्याम-रंग भौह सिर-केश छवि देत हैं ॥
वचन बोलत मनो हसत कालुष हरम ॥ भौन ॥
कोटि-शशि भानु दुति-तेज छिप जात हैं ।
महा-वैराग-परिणाम ठहरात हैं ॥
वचन नहिं कहैं लखि होत सम्यक धरं ।
भौन बावन प्रतिमा नमो सुखकरं ॥
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण-दिश
द्वी-पंचाश-जिजनालयस्थ-जिन-प्रतिमाभ्यो जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
नन्दीश्वर द्वीप अर्घ
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिणे चार अन्जनगिरी, सोलह
दधिमुख, बत्तीस रतिकर, बावन पर्वत स्थिते बावन जिनचैत्यालयेभ्यो पांच हजार
छह सौ सोलह जिन बिम्बेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

नन्दीश्वर-जिन धाम, प्रतिमा-महिमा को कहै ।
‘धानत’ लीनो नाम, यही भगति शिव-सुख करे ॥
इत्याशिर्वादः ॥ पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥